बड़ी बैठक

पहले पुराना जमाना था - एक ही कमरे में परिवार के दस सदस्य रह लेते थे - वही सोने का कमरा - वही बच्चों ने पढ़ना - वहीं खाना-पीना - कोई मेहमान आ जाए तो वो भी उसी ही कमरे में। अब जमाना बदल गया - बड़ी-बड़ी कोठियां - इतनी बड़ी कोठी - रहने वाले सिर्फ तीन सदस्य - कमरे दस ऊपर नीचे - एक Drawing Room - एक Dinning Room - फिर दो तीन Bed Room एक Guest Room एक Study Room बीच में Lobby जो सब कमरों से Linked है। Lobby में तख्त, सामने T.V. और Phone ज्यादातर औरतों का समय तो Lobby में ही बीतता है। कमरे तो सारा दिन खाली ही पड़े रहते हैं - कई कमरे तो कई-कई दिन खुलते ही नहीं।

हमारे रंग महल की कोठी कितनी बड़ी है - नौ भोम दसवीं आकासी, चांदनी - कितनी हवेलियां है - हर हवेली में कितने मन्दिर हैं थंभ - गलियां - कितना बड़ा विस्तार है? पर श्री राज श्यामा जी युगल स्वरूप रोज पांचवी भोम से उठकर तीसरी भोम की पड़साल में १२००० सखियों को लेकर आते हैं - पौने छः बजे प्रातः आते हैं और शाम ३ बजे तक यहीं रहते हैं - रात को पांचवी भोम में सोते हैं - दिन में नौ घंटे तीसरी भोम की पड़साल में ही रहते हैं जब कि रंग महल में बेशुमार हवेलिया मन्दिर है। इतने ज्यादा समय तक श्री राज श्यामा जी की बैठक यहीं होती है सारा दिन ही यहां सखियों का बैठना उठना घूमना होता है। इस तीसरी भोम की पड़साल को वानी में बड़ी बैठक करके कहा है।

इतना बड़ा परमधाम है - इतना बड़ा रंगमहल - हवेलियां, मन्दिर, थंभ, गलियां पर बार-बार ध्यान तीसरी भोम की पड़साल पर ही जाता है जहां प्रातः काल पौने ६ बजे श्री राज जी श्यामा जी, सब सखियों को लेकर पांचवीं भोम के रंग परवाली मन्दिर से तीसरी भोम की पड़साल में आते हैं। पड़साल की पूर्व दिशा के मध्य की मेहराब में श्री राज श्यामा जी खड़े होते हैं और दायें बायें ६-६ हजार सखियां कठेड़े को पकड़कर खड़ी हो जाती हैं। श्री राज जी अपनी अमृतमयी नजरों से सातों घाटों के वनों को सींचते हैं फिर चांदनी चौक में खड़े हुए अनेकों जाति के पशु पक्षियों के ऊपर अपनी नजरों से अमृत वर्षा करते हैं। इस समय सभी जाति के वन, पशु-पक्षी श्री राज जी का दर्शन करके श्री राज जी के इश्क में सराबोर हो कर सिजदा करते हैं। और अनेक प्रकार की हुनर कलाओं से मस्ती में झूम झूम कर नाच कर अनेक प्रकार से अपने प्रियतम को रिझाते हैं।

तीजी भोम की जो पड़साल ठौर बड़े दरवाजे विसाल।
धनी आवत हैं उठि प्रात, बन सींचत अमृत अघात।।
पसु पंखी का मुजरा लेवें, सुख नजरों सबों को देवैं।
पीछे बैठ करें सिनगार, सखियां करावें मनुहार।।

इतना बड़ा परमधाम - जगह जगह देहलानें - पर बार बार अपना ध्यान उस देहेलान में ले जाओ जहां दर्शन देने के बाद चार सखियां श्री राज जी का चार मन्दिर की देहेलान में उत्तरदिशा में आभूषणों का सिनगार कराती हैं वानी में इन्द्रावती जी कहती हैं।

Nijanand App

की सखियों के साथ भोजन कराने की सेवा में लग जाती हैं। इस तीसरी भोम की पड़साल में आप धाम के धनी दो बार अरोगते हैं। यहां की बैठक अजब ही निराली है।

ए बड़ी बैठक नूर पड़साले, नूर भोम आरोगें बेर दोए।
पूर नूर होए रूहें अर्स की, ए नूर बेवरा देखें सोए।।

परि० प्र० ३६/४३

भोजन करने के बाद सखियां श्री राज श्यामा जी के चरणों में प्रणाम करती हैं और पानों के बीड़े लेकर वनों में सैर करने के लिए जाती हैं। इधर श्री राज श्यामा जी नीलो पीलो मन्दिर में १२ बजे से तीन बजे तक विश्राम करते हैं। बार बार अपना ध्यान इस नीलो पीलो मन्दिर में ले जाओ। सखियां बनो से अनेकों प्रकार के फल इत्यादि लेकर तीन बजे नीलो पीलो मन्दिर में आती हैं और श्री राज श्यामा जी को आरोगाती हैं। श्री राज श्यामा जी पान बीड़ा लेकर तीसरी भोम की पड़साल में आकर सुखपालों की इच्छा करते हैं। सुखपाल छठी भोम से आकर सेवा में हाजिर हो जाते हैं। श्री राज श्यामा जी सभी सखियों सहित सुखपालों में बैठ कर अपनी इच्छानुसार परमधाम के पच्चीस पक्षो में सैर करने के लिए जाते हैं। इतना बड़ा परमधाम इतना बड़ा रंगमहल नौ भोम दसवीं आकाशी पर सच पूछो बार बार ध्यान इस तीसरी भोम की पड़साल में जाता है यही हमारी बड़ी बैठक है।

बबली - दिल्ली

संवेदना सन्देश

हमारे प्यारे व आदर्णीय सुन्दरसाथ श्री हंस राज जी दूमड़ा (फाजिल्का) दिनांक ८.१२.९९ को धाम सिधार गये। आप धर्म समर्पित, सेवा भावी व बहुत सुल्झे हुये व गम्भीर स्वभाव के मधुर भाषी सुन्दरसाथ थें जिन्होंने अपने साथ-साथ सारे परिवार को श्री निजानन्द सम्प्रदाय से जोड़ा और अनुशासन व सेवा के महान संस्कार दिये।

धाम-दर्शन परिवार उनकी धर्म-पत्नी श्रीमति शीला दूमड़ा, पुत्र सर्वश्री सुरेन्द्र कुमार, नरेन्द्र कुमार, प्रदीप कुमार व संदीप कुमार दूमड़ा एवं समस्त शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता है और धामधनी से हम सब प्रार्थना करते हैं कि वह अपनी अंगना को निज चरणों में स्थान दें।

Nijanand App